शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रतापविजयम् में राष्ट्रीय भावना का अनुशीलन

पायल अग्रवाल (शोधार्थी)
डॉ. रजनीश शर्मा (शोध निर्देशक)
अधिष्ठाता (कला एवं मानविकी संकाय)
संगम विश्वविद्यालय
भीलवाड़ा (राज.), भारत

शोध संक्षेप

हिन्दुस्तान वीर योद्धा और रणबांकुरो की मातृभूमि रही है। यहाँ के वीर सपूतों ने समय-समय पर अपनी वीरता का परिचय देते हुए विदेशी आक्रांताओं से संघर्ष किया है और हिन्दुस्तान के गौरव को सदा ऊँचा उठाया है। इन वीर सपूतों में मेवाड़ के महाराणा प्रताप का नाम भी हिन्दुस्तान के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है जिनकी वीरता, साहस और रणक्षेत्र में बेहतरीन प्रदर्शन का राजस्थान का कण-कण साक्षी है। महाराणा प्रताप के जीवन पर श्रीकान्त आचार्य ने 'प्रताप विजयम' की रचना की। प्रस्तुत शोध पत्र में प्रताप विजयम में अभिव्यक्त राष्ट्रीय भावना का विवेचन किया गया है।

भूमिका

"राष्ट्रे प्रदोष्यतिनित्यमहो प्रदीप्तां, नाम्नः स्मृति सर्पादयस्य नवात्मशक्तिम।
वीराग्रणिर्विजयते भुविस प्रतापो, राणावरस्त्रि भुवनप्रथितः प्रतापः।।
स्वात्याभिमान जन को जनमानसेषु, प्रोद्दिप्त भास्वरयशः परिभासमानः
राणा प्रताप रविरेष सदोदयः सन् नास्तं कदाचन गतौ न पुनश्चगच्छेत् ॥"

मेवाड़ के महान राजपूत नरेश महाराणा प्रताप एक ऐसे राजपूत सम्राट थे, जिन्होंने जंगल में रहना पंसद किया लेकिन विदेशी मुगलों की दासता स्वीकार नहीं की। प्रणवीर प्रताप का संघर्ष जीवन अपने आप में शाश्वत अभियान है। जिस समय महाराणा प्रताप ने मेवाड़ की राजगद्दी संभाली उस समय राजपूताना साम्राज्य बेहद नाजुक दौर से गुजर रहा था। बादशाह अकबर की क्रूरता के आगे राजपूताने के कई नरेशों ने अपने सिर झुका लिए थे। कई वीर प्रतापी राज्यवंशों के उत्तराधिकारियों ने अपनी कुल मर्यादा का सम्मान भुलाकर मुगलिया वंश से वैवाहिक संबन्ध स्थापित कर लिए थे। कुछ स्वाभिमानी राजघरानों के साथ ही महाराणा प्रताप भी अपने पूर्वजों की मर्यादा रक्षा हेतु अटल थे और इसलिए तुर्क बादशाह अकबर की आँखों में वे सदैव खटका करते थे।

अद्भुत पराक्रम शौर्य और राष्ट्र भक्ति की प्रतिमूर्ति महाराणा प्रताप ने अधर्मी शासन की गुलामी को नकार कर स्वाधीनता के संघर्ष को चुना एवं समस्त देशवासियों के लिए वीरता की ऐसी मिसाल दी जो आने वाले युगों तक जन-जन में धर्म व राष्ट्र प्रेम की असीम ऊर्जा का संचार करती रहेगी -

"गाथा फैली घर-घर है,
आजादी की राह चले तुम,
सुख से मुख को मोड़ चले तुम

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नहीं रहूँ परतंत्र किसी का,
तेरा संघर्ष अति प्रखर है,
राणा तेरा नाम अमर है।"

मुख्य रूप से महाराणा प्रताप द्वारा इतिहास प्रसिद्ध दो युद्ध लड़े गये तथा इसके अतिरिक्त खानवा का युद्ध - सन् 1527 ई., चौसा का युद्ध- सन् 1539 ई., कन्नौज का युद्ध- सन् 1540 ई., पानीपत की द्वितीय लड़ाई - सन् 1556 ई, परन्तु महाराणा प्रताप और अकबर के बीच लड़ी गई इतिहास की सबसे भीषण जंग हल्दीघाटी का युद्ध (18 जून, 1576) था। चार घंटे की लंबी लड़ाई ने इसे इतिहास के पन्नों में दर्ज करवा दिया। महाराणा ने बड़े साहस के साथ युद्ध किया तथा उनका यह प्रण था कि वे मुगलों की अधीनता कभी स्वीकार नहीं करेंगे।

इसके अतिरिक्त राजस्थान के इतिहास में सन् 1582 में दिवेर का युद्ध एक महत्वपूर्ण युद्ध रहा। इस युद्ध में महाराणा प्रताप द्वारा खोए हुए राज्यों को वापस पाने का संघर्ष है, जिसमें उन्होंने सफलता हासिल की। कर्नल टॉड ने दिवेर के युद्ध को मेवाड़ का मैराथन बताया। उन्होंने महाराणा और उनकी सेना के शौर्य, युद्ध कुशलता को स्पार्टा के योद्धाओं-सा वीर बताते हुए लिखा है कि वे युद्ध भूमि में अपने से 4 गुना बड़ी सेना से भी नहीं डरते थे।

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रताप ने अपनी वीरता, दृढसंकल्प, रणकौशल नीतियों का प्रदर्शन करते हुए मुगलों को युद्ध में पछाड़ते हुए मेवाड़ राज्य गौरव की हमेशा रक्षा की फलतः संपूर्ण मेवाड़ उनमें भावी महाराणा की छवि देखने लगा।

हमारे राष्ट्र प्रेम व उसके रक्षार्थ और उसके सम्मान के लिए संघर्ष करने वाले कई वीर इतिहास में उल्लिखित हुए जिनमें रानी लक्ष्मीबाई, चन्द्रशेखर आजाद, सुभाष चन्द्र बोस, महात्मा गांधी, सरदार भगत सिंह, बालगंगाधर तिलक, मंगल पांडे, जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री भारत के सच्चे नायक हैं। जिन्होंने अपनी मातृभूमि एवं राष्ट्र के लिये अपने प्राणों की आहुति दी। इसी तरह से हमारे राजस्थान के मेवाड़ की धरा पर वीर ख्याति प्राप्त राष्ट्रप्रेमी, अतुल साहसी, पराक्रमी महान योद्धा महाराणा प्रताप का जन्म अहो भाग्य की बात है -

"धन्य हुआ रे राजस्थान, जो जन्म लिया यहाँ प्रताप ने
धन्य हुआ रे सारा मेवाड़ जहाँ कदम रखे थे प्रताप ने।"

अतः स्वराष्ट्र की भावना में प्रताप का योगदान अविस्मरणीय है। हम नमन करते हैं प्रताप को जो वीरता के प्रतीक लौह-पुरूष, मातृ-भक्त एवं अखण्डता का प्रतीक है।

प्रतापविजयम् में राष्ट्रीय भावना का अनुशीलन

प्रस्तुत काव्य में श्रीकान्त आचार्य ने काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया है कि उदयपुर के संस्थापक महाराणा उदयसिंह एवं जयवन्तीबाई सोनगरा के पुत्र प्रताप मेवाड़ राजकुल के ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण मेवाड़ राज्य के परम्परानुसार उत्तराधिकारी हैं। परन्तु राणा उदयसिंह की दूसरी रानी धीरबाई जिसे राज्य के इतिहास में रानी भटयाणी के नाम से जाना जाता है। जो अपने अयोग्य पुत्र कुँवर जगमल को मेवाड़ का उत्तराधिकारी बनाना चाहती थी। राजपूत सरदारों द्वारा प्रताप के उत्तराधिकारी घोषित होने पर इसके विरोध स्वरूप जगमल अकबर के खेमें में चला जाता है, वहीं मुगल सम्राट अकबर बिना युद्ध के प्रताप को अपने अधीन लाना चाहता था, इसलिये अकबर ने प्रताप को समझाने के लिए

चार राजदूत नियुक्त किये (जलाल खाँ, मानसिंह, भगवानदास, टोडरमल) तथा राणा प्रताप ने चारों को निराश ही किया क्योंकि राणा प्रताप हर स्थिति में देश की मान-मर्यादा एवं स्वतंत्रता के इच्छुक थे। अतः इसका परिणाम हल्दीघाटी के युद्ध के रूप में सामने आया।

18 जून 1576 ईस्वी में यह लड़ा गया युद्ध मेवाड़ के इतिहास में संसाधनों के द्वारा भी अकबर की विशाल सेना के छक्के छूट गए तथा महाराणा की सेना ने मुगल सेना को पीछे हटने को मजबूर कर दिया था और युद्ध से मुगल सेना भागने लगी।

अकबर ने महाराणा प्रताप को अन्य राजपूत राजाओं की तरह अपने अधीन लाने की कोशिश की लेकिन महाराणा प्रताप ने कभी उनके समकक्ष घुटने नहीं टेके। जब परिस्थितियाँ विकट हुई और मुग्ल सेना हावी होने लगी, तब महाराणा प्रताप युद्ध क्षेत्र से पीछे हट गये गुरिल्ला पद्धति से अपनी लड़ाई को आगे बढ़ाए रखा।

उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चों के साथ जंगलों में भटकते हुए तृप्ममूल व घास-पात की रोटियों में गुजर-बसर किया किन्तु कभी धैर्य नही खोया। विकट परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने मातृभूमि के प्रति अपनी निष्ठा और स्वाभिमान को जागृत रखते हुए मुगल शासन के विरूद्ध अपनी लड़ाई हमेशा जारी रखी। महाराणा प्रताप के इस संघर्ष में उनके वफादार घोड़े चेतक ने हर पल साथ दिया एवं अपनी आखिरी सांस तक चेतक ने अपने स्वामी की सेवा की।

महाराणा प्रताप की सोलह पत्नियों में से उनके जीवन में सबसे प्रिय और मुख्य रानी मेवाड़ की पटरानी अजबदे पंवार थी जिसने हर पल हर परिस्थिति में पूरे युद्ध काल में परिवार की कमान को संभालते हुए अत्यन्त कष्ट सहे परन्तु अपने स्वामी के साथ निरन्तर इस संघर्ष में साथ रही। वही रानी सुफला देवी का भी अपना एक विशिष्ट स्थान है, जिनको पं. श्रीकान्त आचार्य ने पतिव्रता, सहिष्णुता की मूर्ति के रूप में चित्रित किया है तथा एक ऐसी वीरांगना के रूप में दर्शाया है जो अवसर आने पर साक्षात् चण्डी का रूप धारण करती हुई अपनी तलवार की धार से यवनों के टुकड़े-टुकड़े करने से भी नही चूकती थीं। महारानी सुफला देवी के शौर्य एवं पराक्रम का अद्भुत दृश्य काव्य में स्पष्ट है।

महाराणा प्रताप के संघर्ष में उनके ज्येष्ठ पुत्र कुँवर अमर सिंह प्राप के संघर्ष काल में ही वयस्क हुए तथा प्रताप के सभी युद्धों में वीरतापूर्वक डटे रहे।

वनेचर भीलों के सरदार भीलराज प्रताप के विश्वसनीय सहायक, मातृभूमि के लिए प्राण न्यौछावर करने वाले योद्धा थे। हल्दीघाटी युद्ध के अतिरिक्त प्रताप का एक अन्य युद्ध (दिवेर का युद्ध- 1582) भी इतिहास में महत्वपूर्ण रहा। मेवाड़ के उत्तरी छोर का दिवेर का नाका अन्य नाकों से विलक्षण था। जब अकबर ने कुम्भलगढ़, देवगढ़, मंदारिया आदि स्थानों पर कब्जा कर लिया तब वहां की चौकियों से संबंध बनाए रखने के लिए दिवेर का चयन एक रक्षा स्थल के रूप में किया गया। प्रताप की नीतियां छप्पन की चौकियों को हटाने में तथा मध्यभागीय मेवाड़ की चौकियों को निर्बल बनाने में अवश्य सफल हो गया परन्तु दिवेर का केन्द्र अब भी मुगलों के लिए सुदृढ़ था।

इस पृष्ठभूमि में दिवेर को लेकर महाराणा प्रताप व मुगलों का संघर्ष जुड़ा हुआ था। महाराणा प्रताप, कुँवर अमरसिंह, भामाशाह, चुण्डावत, शक्तावत, सोलंकी, परिहार, रावतशाखा के

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

राजपूत और अन्य राजपूत सरदार दिवेर की ओर दल बल के साथ चल पड़े। जब अचानक महाराणा की फौज दिवेर पहुँची तो मुगल दल में भगदड़ मच गई। मुगल सैनिक घाटी छोड़कर मैदानी भाग की तलाश में उत्तर के दर्रे से भागने लगे। महाराणा ने अपने दल के साथ भागती सेना का पीछा किया। घाटी का भाग इतना कंटीलाँ तथा उबड़-खाबड़ था कि मैदानी युद्ध में अभ्यस्त मुगल सैनिक विथकित हो चले। अन्ततोगत्वा महाराणा ने उन्हें धर दबोचा। दिवेर थाने के मुगल अधिकारी सुल्तान खां को कुँ. अमरसिंह ने जा घेरा। इस पर भाले का ऐसा वार किया कि वह सुल्तान खां को चीरता हुआ घोड़े के शरीर को पार कर गया। दोनो के प्राण पखेरू उड़ गए।

अतः राणा प्रताप तथा उनके सहयोगियों द्वारा पराक्रम व वीरता के साथ लड़ते हुए इस युद्ध में भी विजयश्री महाराणा के हाथ लगी। एक अर्थ में हल्दी घाटी युद्ध में राजपूतों ने रक्त का बदला, दिवेर में चुकाया। दिवेर की विजय ने यह प्रमाणित कर दिया कि महाराणा का शौर्य, संकल्प और वंश-गौरव अकाट्य व अमिट है। इस युद्ध ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि महाराणा का त्याग एवं बलिदान तथा स्वराष्ट्र के लिए प्रबल भावना ने सत्तावादी नीति को परास्त किया। इस प्रकार महाराणा प्रताप द्वारा किए गए सभी युद्ध सदा उनकी विजय दास्तान की गाथा गाते रहेंगे तथा उनकी निजराष्ट्र के प्रति प्रेम व श्रद्धा को दर्शाते रहेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ

1 पण्डित विद्याधर शास्त्री, पुष्पांजली

2 उदयपुर की ख्यात, सूर्यवंश अन्यवं बावलिया, द्रष्टव्य महाराणा प्रताप स्मृति ग्रंथ, पृष्ठ 12-17

3 प्रताप विजयम्, प्रथमोनिश्वास, पृष्ठ 2-3

4 प्रताप विजयम्, प्रथमोनिश्वास, पृष्ठ 11

5 प्रताप विजयम्, चतुर्थोनिश्वास, पृष्ठ 45

6 अकबर नामा- अबुलफजल, खण्ड - तृतीय, पृष्ठ 440-468

7 अमरकाव्य 6 सर्ग श्लोक, पृष्ठ 237

8 वीरविनोद भाभाद्वितीय, पृष्ठ 164

जीवंधर- अमर सार

9 पं. जीवंधर - अमरसार श्लोक - 58

10 द्रष्टव्य - महाराणा प्रताप विषयक संस्कृत साहित्य का परिशीलन, डॉ. रजनीश शर्मा